



मा
१

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ मंगलमुत्सये नमः ॥ त
त्वा मुशरेश्वर रणार विंदं श्री मात्स्य तातंद इति प्रसि
धः ॥ तं मा स्वस्ति शिष्यहिता नमो मातृ प्रा के विही तेश
शिपक्ष्यै कै १०२१ ॥ १ ॥ प्रा कोत वा दंडु कुरातु
६ युक्तं कले नमः प्राद गरा सुवत्त ॥ विद्यन्त भो लो वत्त

राम
१

मा
२

वेद ४२०० हीत प्रा स्याद विंड कचित्त स एव ॥ १ ॥
प्रथ प्रवक्ष्ये मिहिरो पदे प्रातः सूर्य सिद्धा संज्ञं समासा
त ॥ प्रा स्याद विंड श्वरश्च त्रदि १००० स्ता ता गिद्यु
तो म्र पृजातै ६०० विभक्त ॥ ३ ॥ अखंत गै ७ प्रोषित न
ग ६ युक्तं सूर्या दि संम्वत्सर पालकः स्यात् ॥ प्रो वा

राम
२

हरे प्रो ॥ पञ्चगजासा १०८ लक्षं तवे रौदयि को
ध्रुव स्मात् ॥ ४ ॥ सहस्र १००० ति घुरन विष्णु १० ति
तो धरव सिद्ध २४० मा गोत नवक्र १७०० शेष ख
पंच संयुक्त ५० दशा १० ध्रुवु दि शुद्धा ८९ मा गो
अधिकः शशंक ॥ ५ ॥ ह द्रा ११ ह तो वैद ४ युत सिने

दृष्ट शेषं श्वतु र्षि विद ४ गु रोर राव ३१ ॥ पञ्चक्र
व स्वा गा ७०० प्र यु ते त्नु के द्रे मु ध्या प ८ मा गा वत
खा २० शायुक्त ॥ ६ ॥ को द्रा द्वा ११ दि सु ते त्र चंद्रे १२
पञ्चो तितो नध्य विष्णो ध्रुव स्मात् ॥ पात शारधो
पत गते २७ युक्त सिने द २२ शेषो ग गतां ग ६ ति ध्यां ॥

मा
५

हिरिंदु ३१ रा मा प्र ख ख रा म ३० हितः सा सो व वं दा तु
तरं ग वं दैः १६॥ त्रितंद प्रोषो ६३॥ यदि सू त्प ० कं
स्या त ख र म ३० ही त ख ख वे द वा तै ५४००॥ का व र त
दा च द्र म स स्य पा त सा शो व वं दा तु तरं ग वं दैः १६॥
॥ देशा त रं दि ग १० शि ता प्र सा ध्य मि ती ह क ल्या

राम
५

मा
६

त स मो व्र वः स्या त ॥ ६॥ प्र वं ति दे शा कु त यो ज ना
ति सं गु ण प वा यो ५ र स ६ मा जि ता ति ॥ ही ता चि का
त्यं ग त खे १० ६ व कु र्या द्या कु वे दै ४१ फ ल मं गु
ला ति ॥ ६॥ स्व देशा जा या वि षु व त्पु मा स्या त्यं च त्तु
द स्रा १६ प त रि ता ग ति च्छ ॥ शा ते न म कं म १०० व त्तो ह

राम
६

भा
७

तच्छंदे प्रातरं सूर्य्यं प्राशं कर्के दैः ॥ इति श्री प्राता
तंदविरचिते माखतिकरशोतिविष्कवाचिकारप्र
थमोऽध्यायः ॥ १॥ ॥ प्रास्ताविशौ रावद गरात्क
लेवीवर्षाधियासप्रहतावशोषा ॥ शुक्लेन्दुवा
चस्पतिसूर्यसौम्यशौच्यरा राक्तमजो भवति

राम
७

भा
८

॥ १॥ प्रबोर्क १२ तिद्यौर विमासपुक्तः सप्ता ७ व
शोषार विमाप्राताथाः ॥ न शुक्र सूर्यारसुरेज्य
शोरीचंद्रार्कमासावत मासतोत्प्रे ॥ १॥ अर्द्ध
पृथक् वे प्रा ११० गुणासरागरा मां क २३ ७५ लक्षं
द्वियव १५ पुक्त ॥ तन्प्रष्टि ६० शोषादिपुमिर्वजा

राम
८

भा
१२

तिलध्वातिशोषो गिरसः समास्युः ॥ ४ ॥ अवेखे
त्रा ११० गुणो देव्या पंचचंद्रेषु भो चतारपा ॥ ५ ॥ भा
स्वती करणो प्रोक्ता संस्मिति मिहिरोदिता ॥ ५ ॥
शास्त्राब्दपिंडो वसुवद्विषडुडु ३८ द्युसशीतर
स्मिज्जलतो ३१ महिज ॥ प्राताहते हीदं प्राशशि

राम
६

भा
१०

वत्रै १२०० शोषो द्विवा रौ ५४ अद्युतो व वदा त्रा
॥ ६ ॥ जो चंख बया श्वि २०० द्युमधो दशा १० वृति
चिंतु ११५ लध्वा गिर प्रा श्वि २६६ ही त ग प्रा ता १००
ह तो अ ख त वा २० प्र ते अ स र्या व्य १२२ जी धो व
तरवा २० प्रा युक्त ॥ ७ ॥ ख त द २० ति ध्वा ति अ व्यः

राम
१०

भा
११

शशां के के द्रे शात १०० व्याति यवः प्रदे व्या ॥ के द्रे
जमा षद शर स प्र द श्रे २२५ सो ध्यो वि धुं श्वा
गशा रा धि द श्रे २४५ ॥ ८ ॥ खे पु खुर २५० द्यो क
शरा मि ३५२ यु त्त शि तो व मा वं कु त प १६१ शात
व्यात १०० ख वे द ४० ति चो धित वे पु ५२४ यु त्त श

राम
११

भा
१२

तिर्द श १० व्या त्सु हित श्व रा जै १४ ॥ ८ ॥ भौ मे षा
गिर शा ६३८ प ल क १ स हि ता जे वा ह ता गें द बो
६२ स प्रा गित ३७ प्र यु ता गु रो रा शि दि शो तं दा त्वि
तो १०१ १२ वै धु वे ॥ शु के व्यो म श रा द्र यो ग ग रा
२५० ॥ ३१ यु के र ख वे द प ल लो का धि ४० ॥ ४३

राम
१२

खत बहवै जित २९॥१४॥ पुता राहो गते वत्सुरे ॥

भा
१३

प्रवर राजादि गणित माह ॥ ॥ श्रीकाव्ये गुणि राम
तोरामै ३ भू १ मिश्रो मुनि ताह तः ॥ रव्यादि कम १३
तोरामै मंत्री तस्य चतुर्थक ॥ १० ॥ आकोर आ
मि ३६ पयुक्तो वसु मि १ भा गहारितः ॥ प्रतता

भा
१४

दि ३ मे रौ व प्रवो ता गा प्रकीर्तिता ॥ ११ प्र तं
तौ वा सुकी पवो महा पयुक्त क्षकः ॥ कुतिर
के क ६ शंखो प्रवो ता गा प्रकीर्तिता ॥ १२ आ
कः शंख १ पंयुक्तो मुनि मि १ भा गहारितः ॥
आवाहा दि ३ मे रौ व स प्रवाता प्रकीर्तिता

राम
१४

मा
१५

॥१३॥ प्रा वहः प्र वहः चैव सं वहो वि वहो स्तथा
॥१४॥ हो ति वहो वा यु स प्र वा ता प्र कीर्तिता ॥
प्रा कं शारा जि सं यु तं वे दे ४ तै वा व त्रौ षिता राम
प्रा व त्तं न वि सै व त्तं पु ष्कर द्रो रा सं बु दं ॥१५॥ १५
प्रा व त्तं ति ज जो मे द्यः सं व त्तं वा यु पर क ॥ पु ष्कर

मा
१६

दु ष्करा व षि द्रो शो प्रा स्या व ति म ति ॥१६॥ पु म्मा
इ ज १ गो २ मी त १ २ आ ते प्रा श्रां कै र वि र्य दी क र्क राम
दं कं प्र या ति ॥ ज तं प्रा ता १०० वं ह रि का मु के ५ १६
॥१७॥ पु म्मा तं हि कं त्या द म् ग यो र प्री ति
०॥१७॥ काली र ४ कुं मा १० लि ८ तु ला ग ते इ ध

मा
१७

जे इविस्व रामवति १६ स्तदाती ॥ पत्वा स मुद्रे द
प्रा १० मा गाश्च षडा ६ गाश्चैव पर्वते ॥ प विष्णो
चतुरा ४ मा गा स म्म ग्ग वि ति वा स व ॥ ११ ॥ गु
शित ३ गु शितं शाकं स प्र मि मा ग मा ह रे त
॥ प्रो षं व मा १ ह तै क्ता वा पं व प त त्रा ति यो जये

राम
१७

मा
१८

त ॥ २० ॥ यथा प्राक् सत्तात्तलो यः प्रो षः प
र्व प्रो ष वत ॥ मे षो आ त्प त रा चै व प्री त रै द्रो
स मी र रा ॥ २१ ॥ प्र जा तां च त था व डि स यो व त प
वि ग्र हो ॥ स्ते त व स मा र म्मा ता स्वं प्रा का व तो मु
द्रा ॥ २२ ॥ प्रा को वे दै ४ च गु शितो पर्वते ॥ मा ग मा ह

राम
१८

मा
१५

हेतुः द्विष्टो २ रूपैः १ स्वसंयोगोऽप्यसुधाद्याः क्रमशो भवे
त ॥ २३ ॥ सुधातुपातधातिद्राप्रालस्योद्विमपंचक
॥ शान्तिः को धस्तमोलो म ॥ साहचर्यादशातिर
शोगोरशश्चैव पापपुण्यचतुर्दशः ॥ २४ ॥ ॥ इति
भास्वति करणग्रहचक्राधिकारद्वितीयः ॥ २५ ॥ ॥ वि

राम
१५

मा
२०

श्री ३० इत्यामेघमुखार्कमासादितैः समेताः ज्यतु
वासा रीणा ॥ ध्रुवंदमेतत्तग २ भक्तशेषवाराभ
वंपदमुखवादितोथा ॥ १ ॥ चंद्रा ॥ शिखरि ३ युग
२ भूतपरश्राद्धश्चिंतर्क ६ प्रद्वारा ५ भूत ५ वि
षया ५ श्वेयथाक्रमेण ॥ मेघादिराशिरुषरा

राम
२०

भा
२१

म००० शुभो पुदेवा भुक्तो शकश्च सहितं भवतीति पुत्रं
द॥१॥ सूर्यस्वरक्षांति चय पुदेवा पच क सता
१०० प्राक्मेशाश्च खंडा प्रोषाश्च भुक्तो तित भो
ज्यतिद्याशाता १०० प्रयुक्तो भुक्तो क सफर स्यात्
॥३॥ सूर्यस्य पंचो प कर र वि १२ इ १४ भू वा १६

राम
२१

भा
२२

मता १० तवेदु १८ कुय मार जिता २४ च ॥ सप्राश्चिता
२० चंद्रो गार शा गि ४६ अष्टि ४२ स्वताता ४८ द्विजारा
५० शरा गा ६५ ॥४॥ पचाद्रयो १५ वेद गजा ८८ क
तोत्पा ८४ त्रिखंदयो १०३ भातु भुक्तो ११२ कु सूर्या १२१ ॥
पुषाश्चि चंद्रा १२८ शराम चंद्र १३५ चंद्राश्चि चंद्रा १४१

राम
२२

भा
२३

शारवर्जिणा १४५ श्वा ॥ पा ॥ ॥ इति सूर्यखेदा ॥ ॥ ॥
पौशां हि गुणां क्वा तदर्थे जन्म कालिका ॥ सूर्यो दद्या
दिद्यदिका विलिखेत्सु च पापुत ॥ ६ ॥ स प्रमार्गे स्थ
तं कृयाद्दहस्तात्कालिका भवेत् ॥ भोग्याद्वे स प्रम
सा कता प्रा १०० स प्रा त्वितं १ स्यात्सुद सूर्य भुक्ति ॥ १॥

राम
२३

भा
२४

खतं द० ति ध्याति अथ प्रा शां के के द्रे शात १०० ध्याति
अथ प्रदेया ॥ के द्रे क्रमा षट् शार स प्रद चै २१५
सोध्यो विधुश्चा ग शरा धिद श्रै २४५ ॥ या वा क्रम
के द्रे गतो विमुदस्ता वस्तु चंद्रे पि विप्रो ध तीवः ॥
ही ते च चंद्रे भ शातं तु दत्वा शोध्यो विधो रे त दिहा दि

राम
२४

भा
२५

केसित ॥ १॥ इंदुघुबुद्धिपहित खसर्वे १२० वस
हं मा सोतयु तस मा हीन ॥ चरार्थ न का गो विपु
वादि मासे ख ० चंद्र १ ते २ २ व द्वय २ चंद्र १ जि ० ग्रा १०
॥ पुत घुवं ताडु गतं पु ० लुचं श्रीतां शुक्लं देतुयुतं प्र
कुर्वीत ॥ इंदो ख ० रूपा १ मि ३ रसा ६ ख चंद्र १० तपा

स म
२५

भा
२६

१६ जि ता २४ पं च गुणा ३ पर सा धि ४ ६ ष वि ६ ० सर
गा ७ ५ कु त बा ८ १ ष का षा १० ८ ष र मा त वो १२ ६ राम
म तु १४ २ र्त वा ह १ ५ ८ ॥ ११ ॥ पं चा बु द १ ७ ५ खो क भु
व १ ८ ० हि ख श्वि २० २ वि श्रा श्वि २१ ३ जा त्य श्वि २२ २
खि स म द श्रा २३ ० पं चा मि ६ २ ५ ५ गो मि य मा २३ ८ कु

स म
२६

भा
२८

१०० मूर्त्यं प्रातः १०० श्रो॥ धितो प्राप प्याहता ६० मुनि
हृत्तो प्रतापः ॥ राशि प्राप्ता का हरे जाति २२ पत्र ध्वं
तस्य त्रवत्तुटिका श्वश्रोषा ॥ १४ ॥ एवं रवि दोषु
तितश्च जोगा सप्ता ॥ ७ ॥ तिला चंद्रगतिस्तद्द्वारा ॥ १५ ॥
प्रकोत चंद्रा च चाराधि ४५ हीतततो वशिषा च च

राम
२८

भा
३०

राधि ४५ लब्धं ॥ सप्ता वशोषं करणं ववाद्यंत न्नादि
कायाः स्ति भवोद्वंति ॥ १६ ॥ परेदले कृष्ण चतुर्दशी
वति चर्द्ध भोगादकृतिः चतुष्यात् ॥ तणं च किं स्ति
धृमिति क्रमेणा च वारि विंशत्करणाति तित्यं ॥ १७ ॥
दि तेदि तेहर्गणारूप १ युक्ते सप्ते १ वसूर्योश्च खतं

राम
३०

भा
३१

तदमिदो॥खखेदु१००॥कैदेतयुतप्रकुवात्पुग्व
स्पष्टिकार्यमितिप्रसाद्यं॥१०॥॥इतिश्रीभास्व
तिकरसोतिचितक्षत्राचिकारसितीय॥३५॥
मौनःश्वर७आद्यगणाकता४प्रपुतर्धुवदात्रिगताप्र
३००हीत॥प्रपाद८८शेषखखराम३००तिद्युपक्षा

राम
३१

भा
३२

२२मिःसोमसुतस्पश्रीद्यं॥१॥गुरुगुगा३द्याद्युग
सादशा१०प्रवेदादि४४मिल्लद्यविवर्जितश्च॥वेदा
४हंतोद्योगरा३भागयुक्तसितस्पश्रीद्यंसहितंस्वरा
कै१४०॥२॥प्रातिर्धुवदात्रव९मक्तलद्यकुवात्वि
ताख्युदयस्पमध्या॥॥भवन्तिजीवाकजभमिपु

राम
३२

भा
३२

त्रेजभागवौ श्रीगुगतिर्भवतां ॥३॥ दि१० घ्रादु तो१०
तातवतगां ७ ग्राहीत विभि ३ न गुजोर्विकुजे ज्य श्री घं
॥ दि१० घ्रातो १० तादिपरित पाता स्वगां ७० ग्राहीता वि
त ये तेल छं ॥ पा ज्यं स्व स्वाके १२०० पुददत्र ज्यो
षंत स्याद् गुजोर्विकुजे ज्य श्री घं ॥ पुषे ६०० पु ५०० वर

राम
३३

भा
३४

५०० तंद १०० वत ४०० ग्राता व्यं पयग्रा हाषर भग नैष्य
केंद्रा ॥ ५ ॥ रुद्रा ११ तवेदु १२ हिव मा २२ तवेदु १२ रुद्रा २२
मो ज्यो दुव युक्त हिता ॥ घ ता ११ ग ता गं ज्य ३३ सु
यं २ ति घाद गो १० घ ता ही त घ तं च मध्ये ॥ ६ ॥ पय
कं ज्य श्री घा तित के द्रुषडा त्रि घा त्स्व श्री घा त युत सु

राम
३४

भा
३५

८ स्यात् ॥ पंचराशि स्थितो यत्र त्रिंशद्घृतत्रैवकारयेत्
॥ १० ॥ ग्रहा स्वशीघ्रोति तको वदा स्यादसौ च ते वा प्रार
राशिसंख्या ॥ राशि विताका तत्रिंशद्गुणात् प्रकुर्वीत दोतत
शीघ्रफलं प्रशाध्यं ॥ ८ ॥ भौ मस्य स्वाधि ४० तग सप्त २१
विशा ११० देवेदु १३३ जातिदु १२२ गजो १०० तगार्थात् ५१ ॥

रा
३५

भा
३६

जस्य ह्य २१ मग्नियु ५३ कु सप्त २१ षट् स्वरा २६ त्रिपंच ५३
सप्राप्ति ३० तवेदव १२ स्म ता ॥ १२ ॥ गुरोत् पा १६ स्वाग्नि ३०
गजत्रय ३८ चषट् मयो ३६ रामय मा २३ तपा १६ जा ८॥
म गोहि वेदा ४२ कु गजा ८९ षसूर्य १२० व्यो मा ह १००
ता गेंद्र १४८ मभू १२० स्त्रि शो ला २३ ॥ १० ॥ या ने हि शो १०

रा
३६

मा
३७

वो १७ कुयमा २१ तवेदु १५ हि न मयो १२ मै गल ८ म ५
य ४ ५॥ रवे म्भरा २ ख त व ति ८० ॥ इ दो के द्रे प्रा तं १००
न १ त म म ॥ बि सि द्धौ ० १२ ४ पा दो त द्ध १ ४ ५ रा म ध तौ
३ १ २ ख मे दौ ० १ ७ प्रा दौ ३ १ ७ ख स प्रा ० ७ व ति ना दि
का ता ॥ ११ ॥ अ यो ध ता ३ १ ७ नि श्च इ मा त लौ व १ ३ १ ३ ८

रा
३७

मा
३८

अ यो ध प रि पु ते ॥ क ता त न म य ता शार्ध सु तो मं यु ज य
ध ता ३ १ ७ प्र च त र वा ५ १ ० गु रा दौ ३ १ ७ कु जा दि श्री ध्र
स्य च न क यो म रु त्ता स्म ति यो ग ति त प्रा वि रौ ॥ ध ता
१ ७ ग ७ ना ग ८ त्रि र वि १ २ ध्रु वृ त्ति भो ग प्रा ह ता या ख
प्रा ता १००० प ल द्य ॥ ७ ते तु खं डे स हि तो त्प यो ता मं द सु

रा
३८

ASHA ARCHIVES	98/1
Rajendra Prasad	

ASHA ARCHIVES

३८

भा

ता मुक्तिरियं कुजादे ॥१२॥ मंदस्युत्तरी घृग तौ विसेध्य
 प्राग्ब्रह्मता भोग्यहताशता १०० वा ॥ ब्रह्मपमो प्रोस्यम
 रायथाप्याह काति चारे विपरीत प्रोध्य ॥१३॥ भादि
 कृत ४ ब्रह्म ५ हतो ग्रहस्तराप्रपादिरं कै ५ गुणितं कृ
 ता ४ प्र ॥ भादि भवेदादि पुरा शिहार शरकृति २२ परा

राम

३८

भा

क०

शिमुरवेशतं १०० वा ॥१४॥ विष्ठा १३ शि २ गं चर्व ८ दशा
 १० ग ६ मा से १२ चक्रा ६०० के द्रा दिति जादि पु ह्य ॥
 पदु ह्यो ३६ द्रा दशा १२ रा मा भा ५६ वेदा शि तो २४ स
 प्रर सा ६७ के मे रा ॥१५॥ स्वश्रीघ के दस्य तु मंडला ६०
 पूर्व परा वक्र के वा सरा स्यु ॥ प्रकी ६० हि १६ म्पा

राम

४०

मा
४१

१६क गुरा ३८ कु दश्वा २१ चक्रा दित १३०० प्राक पयो
स्त ग स्यात ॥ ११ ॥ सु बन्त भृ गो व सु ८ पंच ५ प्रडा ६००
प्रागूत खेह परतो वि को कीत ॥ १८ ॥ भौ भौ ग छति
व क्र तां शु विशा शर र्त्तो ६५३ स्व श्री धो तिते त द चंद्र सु
त स्रयो द श मु तौ ११२ जी जो रि ष व प व तै १६६ ॥ शु

रा
४१

मा
४२

क्र वि पुर प्रो ६५० ख रां शु त त ओ ब ह्री तु ता गे ८१३
पुतः को तिल्य परि ह त्प पु ष्य ल गति मा गी भवे ह
द्वि ते ॥ १५ ॥ भौ भौ स द ह तं गृ ह २३ ख ज ल दे ११० भौ
म्यो रि वे दे ४६ गुरु व्यो मा खो ८० भृ गु जो य मो रि पु
र प्रो ६६ के द्र य श्री धो तिते ॥ त ध्व सं प्रा श्री ज सि

रा
४२

भा
४३

पन्नगरसे ६८३ काषारि पौ भार्गव ६१० सन सिं श्व ऊ
विशो धिते स मुदयं याति च्चु वं खे च राः ॥ २० ॥ प
स प्रभात त्व २५ ख खो कै १०० पुक्ता स्फु र्ग के त स
मो यदा स्यात् ॥ या म्या तदा स्यादु ज के ति श्रा ते सु
तर ग ख स्य सुरा रि हतु ॥ २१ ॥ स ख म्हा त्प ति तो क

राम

४३

भा
४४

सामं यदो दुवा स्तं सं मुपै तिति त्यं ॥ २२ ॥ यु व द म ल्य
८६ त य त्र दि मि १० ल खं कु क यु द ति तं तु च क्रो त १२००
॥ सं शो ध्य ते रा ड र वि प्र ती पा त द्य त्र जो रा गि ग त श्व त
८६ त ॥ १३ ॥ पा तं तं रं पा त धु वा डं यु ग रा क त ४ द्या द
श्रा १० प्र यु क्तं म ग सो २१०० त्प ज्ये त्नु ॥ रा ड सदा नं ऊ गे ति

राम

४४

गी
४५

सुहस्पदादिस्तु चकार्द १२५० युतस्तु पुह ॥ १४ ॥ मं
वंध्रवकेन्द्रस्याधीष्टकेन्द्रसुहग्रहं ॥ ध्रुवशीघ्रान्तरं
युर्थात्सुहमुक्ताविभाजितं ॥ २५ ॥ त्वष्ट्रफलंदिता
दिप्याहधिक्केध्रुवकेन्द्रके ॥ चतंदितगरोकुर्वीह
रात्रिद्येधिक्केपुत ॥ २६ ॥ ग्रहेवक्तुगतेमार्गेपातेवक्तु

राम
४५

गी
४६

र्ध्वमेतथा ॥ प्रस्तोदयेचतर्गोस्याह्यप्रयं पूर्णचक्रके
॥ २७ ॥ मीतमेषगतश्चंद्रसततंदक्षिशोन्नतं ॥ प्रत्ये
ष्टोन्नरश्चंद्रस्यासमस्तवषकुंभवो ॥ २८ ॥ इति श्री
मास्वतिकरगोग्रहसुहकारश्चतुर्थ ॥ ४ ॥ रूपा
क्षिवेदै ४२१ स्तीताध्वकादो रहिः शोषये कृत्यतमो

राम
४६

४१

४२

गरामैः ३६०० स्वल्पात्सकीयाई युतादी भक्ता प्रातेन
 लब्धा अवताशक्तस्यु ॥१॥ ध्रुवन्द तो गाष्ट कुमि गजं राम
 बुदैः स्वपैर्गितै प्योत्तरद सिरोतु ॥ तत खरा मेभ ४७
 मश्राश्च दद्यात्साई प्रषष्टं चरदं चरदं ॥२॥ पत्र
 प्रभाद्यं शारषट्पयं मा प्रं पंचैतु तो यो ज्य म रा च गो

४३

४४

सात ॥ प्रहृष्टं व्यस्तमतो ति श्राद्धं तयो दुतै प्यं तरितं त
 तं च ॥३॥ षडं राहं देश भाही तं स्या व्या म्या हि रा मो प्राही रा व
 तं देशा प्रे ॥ तदं सि ही ता सि वि युक्तं युक्तं भा तो रुद गद सि ४८
 रातः प्रभा स्यात ॥४॥ छो या दश १० द्वा सत १०० संयुता
 च मध्य प्रभा ता भव ति ह शं कुः ॥ गता हता दं त सदा प्र

का
४८

महर्गतेष्यो घटिका दिकात्मा ॥४॥ ख खिंदु १०० तिष्ठाद्यु
दला इतेष्यताद्या प्रयुक्त प्रभया समेतं ॥ आतो तितंतद
शमि विभक्तं लघु गुलाद्या भवती सितामा ॥५॥ लग्नं
तु सूर्योदयतः प्रशाच्यो स्वभोदये सौरदिता तु पातात् ॥
॥६॥ संगुणपषष्ठा यत संज्ञकां शागजै विभज्येष्ट रवौ

राम
४८

भा
४०

प्रयोजनं ॥ शराश्चिद्युग्मे २२५ यमैः श्री मनेत्यत्र द्या प्र
कात् सिपे त्वोदयकात् क्रिया दीत् ॥७॥ संगुणपभी
ज्योदयके तशेषे विभज्येष्टं वाश्चि २२५ यमैः प्रलब्धं ॥
कुलोदये क्ये सहितं प्रकुर्वीत् षष्ठा विभज्या प्रकलेत
युक्ता ॥ सूर्योदयाद्या घटिका प्रकुर्वीत् षष्ठा ६० चि

राम
५०

भा
५१

कोतः परशौहं प्रमुसय ॥ ततः क्रियादीतुदया प्रशोध्य
मुक्ताकतुल्योदयमं विधेय ॥ ८॥ शोषं खवद्वा ३० दि
गुणा विमज्ज भोग्योदया प्रभवती षट्पञ्च ॥ तत्र प्रयोज्यं
प्रामं विलग्नं वा मित्रं सज्जनं कथीतं मुतीदु ॥ ९॥ लंकोद
यै पूर्व न देवसाध्यं प्रख्यापु न ज्येति यथोदितं तत

राम
५१

भा
५२

॥ स्यात्प्राक्कपाले ततः तद्दीतं युक्तं प्रकुर्वीदपरे कपा
ले ॥ १०॥ तश्चुच्यते तत्र तं प्रयो ज्योषष्ठी पुतस्तत्र तं
विशोध्यं ॥ लंकोदये स्तज पुतः प्रसाध्यं मध्यं विलग्नं
प्रथमोक्तं मागो ॥ ११॥ मध्यो विलग्नै रशामं प्रयो ज्यं प्रा ता
लसं कल्पितो मुतिदु ॥ तं चतुर्थांश्च शुखिकलयात्म
भ्यां शुद्धा मित्रं खमं विशोध्यं ॥ १२॥ खमं विलग्नं

राम
५२

भा

५३

वैविशोध्यप्रोषयं प्राखकीयं क्रम त प्रयेज्यं ॥ भाव
होयोयो गदलस्त संचित त स्थितः स्याद फलो ग्रहे द्वा ॥ १३ ॥
चंद्रा शि तिद्या पल भा हित च लं का व चि स्या दि ह द सि
शा दि ॥ हि गुरा विषुव द्या या वि म ज क्रम प्रा सि धा
॥ १४ ॥ प्र को १२ षट्पु रौ ३६ तं च र ख ड वि ता डि का ॥

राम

५३

भा

५४

वैश्वर्य २०८ तं त दं द शि २१९ स्त्रि र द च ३२३ क्र मो क्र
मा त ॥ च र ख डो ति तं यु क्रं वि ता प्रो जा ति को द या त
॥ १५ ॥ ॥ इ ति श्री भा स्व ति कर रो स्त्री प्र ह्ना चि कारः पु
चं मः ॥ ५ ॥ हि २ द्योर वि प्र व क्ता ४ प्र यु क्रो दि मि १० त मे
ष ८ द्वा दि ता ध्रु वा लः ॥ त मे यु ता की त व र ख २०००

राम

५४

४१

५५

भाप्रसा मया मये परो ल्या स्वदशां १० प्राहीत ॥ १ ॥ मातहि
मोत्रोर्गतिरग्निहीतदिद्याच्चतुष्टमिष्यतमप्रमासां
॥ त्वोर्गतोर्दशारवर्जितं वग्रासपुष्पांशोः स्फुटपर्वसं
ध्या ॥ २ ॥ स्वहोदशां सोतितमर्कमातस्वजातिभाजो
तितमिंदुमात ॥ त्रिद्वैतं दुर्गोपपततषा २० ॥ त्वितोर्कमो
ग्नाग्निभाजोतविवर्जितो गो ॥ ३ ॥ स्मिन्मर्दं मं ग्राहहतमि

राम

५५

४१

५६

हरं वंदे खपंच ५० युक्वंडविरखडितंच ॥ हितंच तं प
र्वशिशीतरस्मेः स्य शोचमुत्तिष्यतदिष्टकाल ॥ ४ ॥
ग्रासादिशतिगुशितास्फुटतिजमातैतभाजितं विषा
॥ ग्राह्योतरवंडोदशरागुराश्चखपंच ५० पुरवंडफलं
विमर्द ॥ ५ ॥ हीतध्वतं पर्वशिचवंडमात्वोतिमिस्रतो

राम

५६

मा
५७

लीलतताडिकास्यु॥६॥हिहादशोपिद्यामित्रेसमरा
श्रिजानेभवा॥तभाषद्विकषकेचैवग्रहणाचंद्रसूर्य
यो॥७॥॥इतिश्रीभास्वतिकरशोचंद्रग्रहणाधि
कारषष्ठमः॥६॥ततादशा१०००जित२४युक्ततात्रंत
तंबलंतंतयुतंतंतंच॥तंतवाक२००तिद्योतयुतस्यभा

राम
५७

मा
५८

तोप्राचीप्रतीच्योश्चशरप्रशाद्वं॥१॥पञ्चकांतप्रा
१०००चिकरुद्रभक्ततदसियोगंतरिताततिःस्यात्
॥तंतंबलदि१००गुणितंगुणाप्र३हीतद्यतंप्राक्परव्यो
खराशो॥२॥ततस्तमसंप्रयुताशरश्चशरावरशात्प्रत
रयुक्तस्युदस्यात्॥मातरवेभोग्ययुतागतदो२५तग्राह
कोधःस्थितसर्वचंद्रः॥३॥ग्रासवतु४द्यासवितुःख

राम
५८

भा
५८

राज्ञे ३० ग्रासैः कृतं वे स्थितं महता हर्षे ॥ इति ह सूर्य
ग्रहसो विप्रो प्रसक्त वेद्रग्रहणादिवित्पं ॥ ४ ॥ तं त्वं
तं सौम्यं मृगां विधातव्याम्यं च तं पर्वराती प्रवृ
माव्यो ॥ स्थित्यर्द्धके हाति युति प्रकुर्वीत्याश्रित्य
मुक्तिश्च भवेद्वि तस्य ॥ ५ ॥ इति श्री सतातंदविरवि

राज्ञे
५८

भा
६०

ते भास्वति करणे सूर्यग्रहणादिकार ॥ ७ ॥ ॥
खखेदुवेदा ४९०० दिक् भास्वरस्य प्राग्बुद्धवजाप्र
दिशाशरथ ॥ तत्प्राग्भागस्य कृति सुधाश्रो यथा
दिशो व्यसजितः खरं प्राग् ॥ ९ ॥ मध्यं दिता प्राक्पुन
स्तसौम्यं वा मंत्रं तद्भास्वादेतत्कृतिश्च ॥ कृतो

राज्ञे
६०

भा
६९

स्तुत्सोत्पदिशोक्रमेसायोगांतरं वावलतारविंदो॥२॥
मात्रेशा रादेः स्वततस्मपंचभाजोतद्वकोषहतांगु
लाद्याः॥ चंद्रार्कमातांगुलसंगुशाशाखाखागम
नीवलतीगुलाति॥३॥ चंद्रार्कयोदिक्महामंडलस्य
सव्यापसव्येवलतीगुलाति॥ मध्याह्नदग्दक्षिणा

राम

६९

भा
६२

तः सरंतातमोर्दसूत्रेशारविन्दुखंडं॥४॥ बलत
प्राप्तुखंदेयंतदिक्पैकतायदि॥ मेदेप्रत्यक्षुखं
देयंमिन्दोर्भातोविपर्ययात्॥५॥ स्थित्यर्द्धतिद्यौरका
वेदयुक्तैर्मातांगुलैर्प्राक्परयोस्तादगात्॥ स्पृष्टो
यमोस्यमसोयथावद्विमीलनोक्तीलनिकेभ

राम

६२

५१ ॥ वंति के भवंति ॥ ६ ॥ ग्रा शो गु लं प्र ह्न ह तं स्त्रि त्प र्द
 त वि भा जितं । लं द न्ता गु लं ग्रा से मो क्य ग्रा सा त
 ६२ ॥ रं ततः ॥ ७ ॥ ख र्या शि ने दा ४२०० व्द ग ते यु ग्रा वे
 दि व्यो की तः श्री पु रु षो तं म स्या ॥ श्री मा ल्य ता तं द
 इ ती द मा ह म र स्य ती सं कर यो म नू जः ॥ ८ ॥ इति

राम

६३

५२ ॥ श्री स ता तं द वि र वि ते भा स्य ती कर सो प रि ले षा
 धि का रा अ व मो द्या य ॥ ९ ॥ श्री रा के ७७ प
 ६४ ॥ मा से ३ ति व्यो प वा रे ६ श्री का ती पु रे लि खि तं मी
 म से ने ति शु भ म

राम

६४



स्वस्ति श्री जगज्जाका कोस को हि सा प
प्रज्ञा ज्ञात य सिल लै ख्य को हे --- १

ते पाल देखी रामेश्वर सम्म को ११००

ते पाल देखी द्वार का सम्म ---

को स --- ५००

ते पाल देखी का सि श

म्म को स --- १५०

ते पाल देखी पटना सम्म को स

कोहि साप १२०

तेपालदेखीपेचितसम्भकोस

कोहि साप १२६०

इडलिस्नातदेखीकेपसम्भको

सकोहि साप ४०००

केपदेखीकलकतासको

कोसकोहि साप ४०००

समेश्वरदेखिहारकातक

कोसकोहि साप ————— ८००

समेष्टर देवि द्वारका तर्क

कोसकोहि साप ————— १००

द्वारका देवि कलक ज्ञास

सकोसकोहि साप ————— १५००

तेपाल देवि जगन्नाथ सकोस
कोहि साप ————— ३५०

